शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 17
Issue 1&2
15, Jan- July, 2026

भारतीय ज्ञान-परम्परा में नारी-शक्तिः गार्गी से आधुनिक महिला वैज्ञानिक तक

बीज शब्द :

भारतीय ज्ञान-परम्परा, नारी-शक्ति, ऋषिका, ब्रह्मवादिनी, थेरीगाथा, आधुनिक विज्ञान, इसरो, महिला सशक्तिकरण

भारतीय ज्ञान-परम्परा विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक निरंतर ज्ञान परम्पराओं में से एक है। इस परम्परा की विशिष्टता यह है कि इसमें नारी को केवल सृजन तक सीमित न रखकर ज्ञान का भी मूल स्रोत माना गया है। यह शोध-पत्र वैदिक ऋचाओं की दृष्टा ऋषिकाओं से लेकर, उपनिषदों की दार्शनिक विदुषियों, मध्यकालीन कवियित्रियों और आधुनिक भारत की अंतरिक्ष वैज्ञानिकों तक की एक सुदीर्घ और गौरवशाली यात्रा का दस्तावेजीकरण है।

प्रस्तुत शोध में कालानुक्रमिक पद्धति का प्रयोग करते हुए यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि भारत में नारी-शिक्षा कभी भी पूर्णतः लुप्त नहीं हुई, अपितु सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों के अनुसार उसका स्वरूप बदलता रहा। वैदिक काल में जहाँ गार्गी और मैत्रेयी ने ब्रह्मविद्या पर विमर्श किया, वहीं मध्यकाल में मीरा और अक्का महादेवी ने लोकभाषा में ज्ञान की गंगा बहाई। आधुनिक युग में यही चेतना आनंदीबाई जोशी से होते हुए टेसी थॉमस और रितु करिधल तक विज्ञान और तकनीक के रूप में पल्लवित हुई है। यह शोध-पत्र इस भ्रांति का भी निवारण करता है कि भारतीय विज्ञान और दर्शन केवल पुरुषों का क्षेत्र था, और यह स्थापित करता है कि नारी-शक्ति भारतीय ज्ञान-परम्परा की रीढ़ रही है।

*****

अमित कुमार शुक्ला
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय

भारतीय ज्ञान-परम्परा में नारी-शक्तिः गार्गी से आधुनिक महिला वैज्ञानिक तक

भारतीय चिंतन में नारी और ज्ञान का संबंध

भारतीय संस्कृति विश्व की संभवतः एकमात्र ऐसी संस्कृति है जहाँ ज्ञान की अधिष्ठात्री देवता कोई पुरुष नहीं, अपितु एक स्त्री माँ सरस्वती हैं। यह प्रतीक अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन भारतीय मनीषियों ने ज्ञान, कला, संगीत और विद्या का मूल स्रोत नारीत्व में देखा था।

वेद, जो भारतीय ज्ञान के आदि स्रोत हैं, उनमें नारी को अत्यंत सम्मानजनक और बौद्धिक स्थान प्राप्त था। मनुस्मृति का बहुचर्चित श्लोक

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।"

अर्थात, जहाँ नारियों का सम्मान (विद्वता और अस्तित्व का) होता है, वहाँ देवताओं (दैवीय गुणों) का वास होता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो भारतीय इतिहास में नारी की स्थिति में उतार-चढ़ाव आए, लेकिन ज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान कभी शून्य नहीं हुआ। प्राचीन काल में शिक्षा प्राप्ति के लिए बालिकाओं का भी उपनयन संस्कार होता था। उन्हें दो श्रेणियों में रखा जाता था:

1.सद्योद्वहाः वे जो विवाह पूर्व तक शिक्षा ग्रहण करती थीं।

2.ब्रह्मवादिनीः वे जो जीवन भर अविवाहित रहकर वेदाध्ययन और अध्यापन करती थीं।

यह शोध-पत्र इसी ब्रह्मवादिनी परम्परा से लेकर आज की मिसाइल वुमन तक की विकास यात्रा का विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

१. वैदिक काल – ज्ञान का स्वर्णिम युग

वैदिक काल (लगभग 1500-1000 ई.पू.) को स्त्री शिक्षा और अधिकारों का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। ऋग्वेद में लगभग 27 ऐसी विदुषी महिलाओं (ऋषिकाओं) का उल्लेख मिलता है जिन्होंने मंत्रों का दर्शन किया और सूक्तों की रचना की। वे मात्र पत्नियाँ या गृहिणियाँ नहीं थीं, वे मंत्र-द्रष्टा और समाज-निर्देशिका थीं।

प्रमुख वैदिक विदुषियाँ और उनका योगदानः

•घोषाः ऋग्वेद के दसवें मंडल के दो सूक्तों की रचना का श्रेय इन्हें जाता है। वे चर्म रोग से ग्रसित थीं, लेकिन अपनी तपस्या और ज्ञान के बल पर उन्होंने अश्विनी कुमारों (वैदिक चिकित्सकों) से औषधि विज्ञान का ज्ञान प्राप्त किया और स्वयं को स्वस्थ किया। यह आयुर्वेद के क्षेत्र में किसी महिला का प्रथम प्रलेखित योगदान माना जा सकता है।

•लोपामुद्राः महर्षि अगस्त्य की पत्नी होने के साथ-साथ वे एक उच्च कोटि की दार्शनिक थीं। उन्होंने ऋग्वेद के कई मंत्रों की रचना की। उनका जीवन गृहस्थ आश्रम और ज्ञान-साधना के बीच एक सुंदर समन्वय का उदाहरण है।

•अपालाः अत्रि गोत्र की इस विदुषी ने सोम रस बनाने की कला और कृषि विज्ञान से संबंधित ज्ञान को विकसित किया। उन्होंने त्वचा रोगों के निवारण के लिए सूर्य चिकित्सा और जल चिकित्सा के सिद्धांतों को समझा।

•विश्ववाराः अत्रि कुल की ही एक अन्य विदुषी, जिन्होंने न केवल मंत्र रचे बल्कि स्वयं ऋत्विक बनकर यज्ञ का संपादन किया। यह प्रमाण है कि वैदिक काल में स्त्रियाँ पुरोहित का कार्य भी करती थीं।

निष्कर्षतः इस काल में लिंग के आधार पर ज्ञान का कोई भेदभाव नहीं था। स्त्रियाँ सभा और समिति जैसी राजनैतिक संस्थाओं में भी भाग लेती थीं और बौद्धिक विमर्श का नेतृत्व करती थीं।

२: औपनिषदिक एवं महाकाव्य काल – दार्शनिक विमर्श में स्त्रियाँ

उपनिषद काल (लगभग 800-500 ई.पू.) तक आते-आते यज्ञ-कर्मकांड की जगह ब्रह्म-ज्ञान और आत्म-तत्व की खोज ने ले ली। इस काल में तार्किक बहस और शास्त्रार्थ का महत्व बढ़ा। इस युग की नारियाँ बुद्धिजीवी के रूप में उभरीं।

1. गार्गी वाचक्नवीः साहस और मेधा का प्रतीक

बृहदारण्यक उपनिषद में राजा जनक की सभा का एक प्रसिद्ध प्रसंग है। जहाँ याज्ञवल्क्य जैसे महाज्ञानी ऋषि को चुनौती देने का साहस किसी पुरुष विद्वान में नहीं था, वहाँ गर्गी ने खड़ा होकर उनसे तीखे प्रश्न किए।

• गार्गी का प्रश्नः "हे याज्ञवल्क्य! यदि सब कुछ जल में ओत-प्रोत है, तो जल किसमें ओत-प्रोत है?" उन्होंने ब्रह्म की प्रकृति पर तब तक प्रश्न किए जब तक याज्ञवल्क्य को यह नहीं कहना पड़ा, "गर्गी, अब अधिक मत पूछो, अन्यथा तुम्हारा मस्तक खंडित हो जाएगा।" यह संवाद दर्शाता है कि स्त्रियाँ सर्वोच्च दार्शनिक स्तर पर प्रश्न पूछने का अधिकार रखती थीं।

2. मैत्रेयीः अमरत्व की अभिलाषी

महर्षि याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी का संवाद भी बृहदारण्यक उपनिषद में है। जब याज्ञवल्क्य वानप्रस्थ (सन्यास) लेने लगे और अपनी संपत्ति मैत्रेयी को देना चाहा, तो मैत्रेयी ने एक ऐतिहासिक प्रश्न किया:

"येनाहं नामृता स्याम, किमहं तेन कुर्याम" (जिस धन से मैं अमर नहीं हो सकती, उसका मैं क्या करूँगी?)

उन्होंने संपत्ति ठुकराकर आत्म-ज्ञान की मांग की। मैत्रेयी का यह कथन भारतीय आध्यात्मिकता के शिखर को छूता है।

3. सुलभा:

महाभारत के शांति पर्व में सुलभा नामक विदुषी का वर्णन है, जो राजा जनक के साथ मोक्ष और वैराग्य पर शास्त्रार्थ करती हैं। सुलभा योग विद्या में पारंगत थीं और उन्होंने यह सिद्ध किया कि मोक्ष प्राप्ति में लिंग बाधक नहीं है।

3: श्रमण परम्परा (बौद्ध और जैन) ख्र संस्थागत शिक्षा

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध और जैन धर्मों के उदय ने सामाजिक संरचना में परिवर्तन किया। वैदिक कर्मकांडों के विरुद्ध उठी इस लहर में महिलाओं को संघ में प्रवेश की अनुमति मिली, जिससे संगठित नारी शिक्षा की शुरुआत हुई।

थेरीगाथा: प्रथम स्त्री-साहित्य

बौद्ध परंपरा में थेरीगाथा का अत्यंत महत्व है। यह भिक्षुणियों (थेरियों) द्वारा रचित कविताओं का संग्रह है। यह संभवत: विश्व का पहला साहित्य संग्रह है जो पूर्णत: महिलाओं द्वारा रचा गया। इसमें 73 महिलाओं की 500 से अधिक कविताएँ हैं जो उनके आध्यात्मिक संघर्ष और ज्ञान की गवाही देती हैं।

- महाप्रजापति गौतमी: बुद्ध की विमाता और प्रथम भिक्षुणी। उन्होंने महिलाओं के लिए संघ के द्वार खुलवाने हेतु कड़ा संघर्ष किया और अंतत: बुद्ध को इसके लिए राजी किया।
- पटाचारा और कुंडलकेशी: ये ऐसी विदुषियाँ थीं जिन्होंने अपने तर्कों से बड़े-बड़े पंडितों को परास्त किया।
- संघमित्रा: सम्राट अशोक की पुत्री, जिन्होंने भारत से बाहर (श्रीलंका) जाकर बोधि वृक्ष की शाखा रोपित की और ज्ञान का प्रसार किया। यह भारत की प्रथम महिला श्सांस्कृतिक राजदूतश थीं।

जैन परम्परा: जैन धर्म में भी श्साध्वीश संघ की स्थापना हुई। चंदनबाला जैसी विदुषियों ने अहिंसा और संयम की शिक्षा दी। दिगंबर और श्वेतांबर मतभेदों के बावजूद, जैन आगमों के अध्ययन में महिलाओं की भूमिका सक्रिय रही।

4: मध्यकाल – संघर्ष, संक्रमण और भक्ति का स्वर

मध्यकाल (8वीं से 18वीं सदी) भारतीय नारी के लिए कठिन समय था। बाहरी आक्रमण, राजनीतिक अस्थिरता और रूढ़िवादिता के कारण पर्दा प्रथा और बाल विवाह जैसी कुरीतियाँ पनपीं। औपचारिक गुरुकुल शिक्षा महिलाओं के लिए लगभग बंद हो गई। किंतु, ज्ञान की धारा ने अपना मार्ग बदल लिया। अब ज्ञान पुस्तकों से निकलकर अनुभव और भक्ति के माध्यम से प्रकट होने लगा।

भक्ति आंदोलन की विदुषियाँ:

विदुषी क्षेत्र योगदान

अक्का महादेवी कर्नाटक (वीरशैव)12वीं सदी में इन्होंने कन्नड़ साहित्य में वचन लिखे। उन्होंने सामाजिक बंधनों को तोड़कर ईश्वर (चेन्नमल्लिकार्जुन) को पति माना। उनका साहित्य विद्रोही और दार्शनिक दोनों था।

ललदेदा कश्मीर कश्मीरी शैव दर्शन (त्रिक शास्त्र) और सूफीवाद का अद्भुत संगम। उनकी वाख आज भी कश्मीरी ज्ञान-परम्परा का आधार हैं।

मीरा बाई राजस्थान राजघराने की सुख-सुविधा त्यागकर उन्होंने लोकभाषा (ब्रज/राजस्थानी) में भक्ति का ज्ञान आम जन तक पहुँचाया। उनकी कविताएँ प्रेम और वैराग्य का उच्च दर्शन हैं।

आंडाल तमिलनाडु दक्षिण भारत की एकमात्र महिला आलवार संत। उनकी रचनाएँ तिरुप्पवाई आज भी वैष्णव मंदिरों में ज्ञान और भक्ति का प्रमुख स्रोत हैं।

प्रशासनिक ज्ञान: इस काल में रजिया सुल्तान, रानी दुर्गावती, अहिल्याबाई होल्कर और जीजाबाई जैसी महिलाओं ने राजनीति और युद्ध कौशल में अपनी विद्वता सिद्ध की। अहिल्याबाई होल्कर ने न केवल शासन किया बल्कि मंदिर वास्तुकला और नगर नियोजन में भी योगदान दिया।

5: आधुनिक पुनर्जागरण – शिक्षा की मशाल (19वीं - 20वीं सदी)

अंग्रेजी शासनकाल में जब भारतीय शिक्षा व्यवस्था का ढांचा बदल रहा था, तब समाज सुधारकों ने नारी शिक्षा को पुन: जीवित किया।

- सावित्रीबाई फुले (1831-1897): इन्हें आधुनिक भारतीय नारी शिक्षा की जननी कहा जाता है। 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोलकर उन्होंने उन वर्गों को शिक्षा दी जो सदियों से वंचित थे। उनकी सहयोगी फातिमा शेख ने भी मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में अहम भूमिका निभाई।

•पंडिता रमाबाई (1858–1922): संस्कृत की प्रकांड विदुषी। कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें पंडिता और सरस्वती की उपाधि दी। उन्होंने श्मुक्ति मिशनश की स्थापना की और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया।

•आनंदीबाई जोशी और कादंबिनी गांगुली: ये भारत की पहली महिला चिकित्सक थीं। इन्होंने रूढ़ियों को तोड़कर विदेश जाकर पश्चिमी चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन किया और भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की नींव रखी।

स्वतंत्रता संग्राम और शिक्षा: सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट और महादेवी वर्मा जैसी महिलाओं ने साहित्य और राजनीति के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक संदर्भ दिया।

6. भारतीय संस्कृति और कला की आधुनिक व्याख्याता: डॉ. कपिला वात्स्यायन आधुनिक भारत में यदि किसी विदुषी ने भारतीय शास्त्र (Theory) और प्रयोग (Practice) के बीच की खाई को पाटने का कार्य किया, तो वह डॉ. कपिला वात्स्यायन (1928–2020) थीं। वे भारतीय कला इतिहास, नृत्य और वास्तुकला की अग्रणी विद्वान थीं। उनका योगदान केवल अकादमिक नहीं था, बल्कि उन्होंने स्वतंत्र भारत में सांस्कृतिक संस्थाओं के निर्माण में भी नेतृत्व किया।

•ज्ञान का संरक्षण: उन्होंने प्राचीन भारतीय ग्रंथों, पांडुलिपियों और मौखिक परंपराओं को संरक्षित करने के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) की स्थापना की और उसकी संस्थापक निदेशिका बनीं।

•बौद्धिक योगदान: उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें जैसे 'The Square and the Circle of the Indian Arts' और 'Classical Indian Dance in Literature and the Arts' ने भारतीय सौंदर्यशास्त्र (Aesthetics) को वैश्विक पटल पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया।

•परम्परा का निर्वहन: जिस प्रकार वैदिक काल में स्त्रियाँ कला और विद्या का केंद्र थीं, डॉ. वात्स्यायन ने आधुनिक युग में उसी परंपरा को जीवित रखा। उन्होंने सिद्ध किया कि भारतीय कला केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक और ज्यामितीय विज्ञान है।

7: इक्कीसवीं सदी – विज्ञान, तकनीक और अंतरिक्ष में भारतीय नारी स्वतंत्रता के बाद (1947 के उपरांत), भारतीय नारियों ने विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में जो ऊँचाइयाँ छुई हैं, वह वैदिक ब्रह्मवादिनी परम्परा का ही आधुनिक वैज्ञानिक रूप है। आज भारतीय महिलाएँ शास्त्र और शस्त्र (रक्षा विज्ञान) दोनों में पारंगत हैं।

1. रसायन और चिकित्सा विज्ञान

•डॉ. असीमा चटर्जी : रसायन विज्ञान में डॉक्टरेट (D-Sc) पाने वाली पहली भारतीय महिला। उन्होंने विन्का अल्कलॉइड्स (Vinca Alkaloids) पर शोध किया जिसका उपयोग कैंसर रोधी दवाओं और मिर्गी के उपचार में होता है।

•डॉ. इंदिरा हिंदुजा: इन्होंने भारत में प्रथम टेस्ट ट्यूब बेबीश(IVF) तकनीक को विकसित करने में मुख्य भूमिका निभाई।

•गगनदीप कांग : प्रसिद्ध वायरोलॉजिस्ट, जो रोटावायरस वैक्सीन के विकास में अग्रणी रहीं और रॉयल सोसाइटी (लंदन) की फेलो चुनी गईं।

2. अंतरिक्ष और रक्षा विज्ञान (ISRO & DRDO)

आज इसरो (ISRO) की सफलता के पीछे श्नारी–शक्तिश का बड़ा हाथ है।

•टेसी थॉमस (Tessy Thomas): उन्हें मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया कहा जाता है। वे अग्नि–4 और अग्नि–5 मिसाइल परियोजनाओं की प्रोजेक्ट डायरेक्टर रहीं। एक पुरुष–प्रधान क्षेत्र में उनका नेतृत्व अनुकरणीय है।

•रितु करिधल श्रीवास्तव: इन्हें 'रॉकेट वुमन' कहा जाता है। वे मंगलयान (MOM) की डिप्टी ऑपरेशंस डायरेक्टर थीं और चंद्रयान–2 की मिशन डायरेक्टर।

•मुथैया वनिता: चंद्रयान–2 की प्रोजेक्ट डायरेक्टर बनने वाली पहली महिला। इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम इंजीनियर के रूप में उनका योगदान डेटा हैंडलिंग में अतुलनीय है।

•कल्पना चावला: यद्यपि वे नासा (NASA) से थीं, परंतु उनकी जड़ें भारत (करनाल) में थीं। उन्होंने भारतीय लड़कियों को अंतरिक्ष के सपने देखना सिखाया।

3. कारपोरेट और तकनीकी नेतृत्व

आज किरण मजूमदार शॉ (Biocon) जैसी महिलाएँ जैव–प्रौद्योगिकी (Biotechnology) के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व कर रही हैं, जो यह सिद्ध करता है कि व्यापार और विज्ञान के संगम में भारतीय नारी का कोई सानी नहीं है।

8. समीक्षात्मक विश्लेषण

उपर्युक्त अध्यायों के अध्ययन से भारतीय ज्ञान–परम्परा में नारी की स्थिति का निम्नलिखित विश्लेषण उभरकर आता है:

1.ज्ञान की निरंतरता: वैदिक काल की ब्रह्मवादिनी से लेकर

आधुनिक काल की वैज्ञानिक तक माध्यम बदला है (संस्कृत मंत्रों से कोडिंग और गणित तक), लेकिन जिज्ञासा और अन्वेषण की मूल भावना वही है।

2.बाधाओं पर विजय: मध्यकाल में सामाजिक अवरोधों ने औपचारिक शिक्षा रोकी, लेकिन भारतीय नारी ने अनौपचारिक माध्यमों (भक्ति गीत, लोककला, गृह-औषधि) से ज्ञान को जीवित रखा।

3.विषय-वस्तु का विस्तार: प्रारंभ में नारी का ज्ञान दर्शन और अध्यात्म तक केंद्रित था। आज इसका विस्तार एयरोस्पेस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), नैनो-टेक्नोलॉजी और रक्षा क्षेत्र तक हो गया है।

4.होलिस्टिक (समग्र) दृष्टि: भारतीय महिला वैज्ञानिकों की विशेषता यह है कि वे आधुनिक विज्ञान के साथ-साथ भारतीय मूल्यों (परिवार और संस्कृति) का भी संतुलन बनाए रखती हैं। जैसे—इसरो की महिला वैज्ञानिक साड़ी पहनकर और बालों में गजरा लगाकर उपग्रह लॉन्च करती देखी जाती हैं, जो परंपरा और आधुनिकता के सुंदर समन्वय का प्रतीक है।

9. **निष्कर्ष**

भारतीय ज्ञान-परम्परा में नारी-शक्ति का इतिहास मूक दर्शक का नहीं, अपितु सक्रिय रचनाकार का रहा है। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछकर जिस बौद्धिक स्वतंत्रता की नींव रखी थी, आज रितु करिधल और टेसी थॉमस उसी नींव पर विज्ञान के भव्य भवन का निर्माण कर रही हैं।

इस शोध-पत्र का निष्कर्ष यह है कि भारत को विश्वगुरु बनाने की संकल्पना नारी-शक्ति की भागीदारी के बिना अधूरी है। वर्तमान में सरकार की नीतियाँ (जैसे विज्ञान ज्योति, किरण स्कीम) और सामाजिक जागरूकता ने पुन: उस वैदिक आदर्श को स्थापित करने का प्रयास किया है जहाँ नारी केवल गृह-स्वामिनी नहीं, बल्कि ज्ञान-स्वामिनी भी है। 2025 और उसके आगे का भारत एक ऐसा भारत है जहाँ सरस्वती प्रयोगशालाओं में शोध कर रही है और दुर्गा सीमाओं की रक्षा—यही भारतीय ज्ञान-परम्परा की सच्ची विजय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1-Agarwal] P- (2020)- Women in Vedic Knowledge Systems- New Delhi: Arya Publications-

2-Altekar] A- S- (1959)- The Position of Women in Hindu Civilization- Delhi‴ Motilal Banarsidass- (हिंदी अनुवाद‴ हिंदू सभ्यता में स्त्रियों की स्थिति).

3-Thapar, Romila- (2002)- Early India: From the Origins to AD 1300- London: Penguin-

4-Bhatia] S- (2018)- Daughters of the Void: Women Scientists of India- Science Reporter-

5-Murthy] K-S- (2015)- Vedic Women and their Contribution to Society- Journal of Indian History & Culture-

6-Government of India (DST)- (2023)- Reports on Women in Science and Technology-

7-शास्त्री, शकुंतला. (2010)- वैदिक कालीन नारियाँ. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन.

8-ISRO Official Website- (2024)- Women in Space Missions-

◆◆◆